Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2024: 8.058,
https://www.srjis.com/issues_data/235
PEER REVIEWED, REFEREED & INDEXED JOURNAL, JUNE-JULY 2024, VOL-12/64

राजस्थान स्टेट सर्टिफिकेट ऑफ इन्फोर्मेशन टेक्नोलॉजी (RS-CIT) की विद्यालयों में अनुप्रयोग के प्रति अध्यापकों की अभिमती का अध्ययन

सरोज प्रजापत

शोधार्थी, पैसिफिक एकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर

डॉ. कपिलेश तिवारी

शोध निर्देशक, प्रोफेसर, शिक्षा पैसिफिक एकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर

Paper Received On: 21 June 2024

Peer Reviewed On: 25 July 2024

Published On: 01 August 2024

Abstract

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक नये परिवर्तन आ रहे हैं। जहाँ किसी समय शिक्षा प्रक्रिया एकमुखी थी जिसमें अध्यापक मुख्य वक्ता होता था तथा विद्यार्थी मूल श्रोता। किसी समय शिक्षा का तात्पर्य बालक के ज्ञानात्मक पक्ष के विकास से था। वहीं आज के इस युग में शिक्षा के क्षेत्र में बड़े क्रान्तिकारी परिवर्तन आये हैं। बालकेन्द्रित शिक्षा तथा शिक्षा में मनोवैज्ञानिक प्रयोग इसी के परिणाम है। वर्तमान समय में शिक्षा केवल बालक के स्मृति स्तर का विकास का ही नही बल्कि बालक के सर्वांगींण विकास का उच्चतर उद्देश्य रखती है जिसमें बालक के शारीरिक, चारित्रिक, बौद्धिक, नैतिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक पक्षों के समुचित विकास पर बल दिया जाता है।

मूल शब्द *– अभिमति एवं अनुप्रयोग।*

प्रस्तावना –

RS-CIT एक राजस्थान राज्य सरकार द्वारा एक प्रमाणित आईटी कोर्स जिसका उद्देश्य छात्रों, पेशेवरों और गृहिणियों को बेसिक कंप्यूटर ज्ञान प्रदान करना है। इस कोर्स को कंप्यूटर के फंडामेंटल और प्रैक्टिकल कार्य दोनों को कवर करने के लिए संरचित किया गया है, जो इसे सभी उम्र के लोगों के लिए इजी और फायदेमंद बनाता है।

आर.एस.सी.आई.टी. पाठ्यक्रम (राजस्थान स्टेट सर्टिफिकेट इन इन्फह्र्मेशन टेक्नोलहजी) कार्यक्रम ही एकमात्र विकल्प है! आरएससीआईटी पाठ्यक्रम एक संपूर्ण कंप्यूटर शिक्षा है जो लोगों को महत्वपूर्ण कंप्यूटर क्षमताओं और ज्ञान से लैस करने के लिए बनाई गई है।

Copyright@2024 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

RKCL का RS-CIT कोर्स आईटी साक्षरता का राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त कोर्स है, जिसके अंतर्गत कम दर पर उच्च गुणवत्ता की शिक्षा उपलब्ध करवा कर डिजिटल क्षेत्र में कंप्यूटर की शिक्षा प्रदान की जाती है| RKCL का RS-CIT कोर्स विभिन्न सरकारी नौकरियों के लिए आवश्यक योग्यताओं मे शामिल है।

राजस्थान सरकार ने डिजिटल साक्षरता के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए एक उल्लेखनीय परियोजना, RSCIT फ्री कोर्स फहर फीमेल 2024 शुरू की है । इस कोर्स से पूरे राज्य की महिलाएं मुफ्त बुनियादी कंप्यूटर प्रशिक्षण प्राप्त कर सकती हैं। आरएससीआईटी पूर्ण रूप राजस्थान राज्य सूचना प्रौद्योगिकी प्रमाण पत्र राजस्थान ज्ञान निगम लिमिटेड (आरकेसीएल) द्वारा राजस्थान, भारत राज्य में डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए शुरू किया गया एक कार्यक्रम है। इस प्रकार कम्प्यूटर की बहुउपयोगिता व बढ़ते हुए क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए आर.एस.सी.आई.टी. की आवश्यकता अनुभव की जा रही है।

<u>अध्ययन का महत्व</u> :-

शिक्षकों की बहुमुखी प्रतिभा उनकी योग्यता, क्षमता, रूचियों और ज्ञान के आधार पर बनती है। आने वाले समय की क्या आवश्यकताएं होगी? बच्चे उनका समाना कैसे कर सकेंगे? उनके लिये इस समय क्या चीजें उपलब्ध करवानी आवश्यक है तथा कैसे उपलब्ध हो सकेंगे? इन बातों के बारे में शिक्षक को लगातार जागरूक रहना पड़ता है। इन्हीं को ध्यान में रखकर शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है। यदि शिक्षक को आर.एस.सी.आई.टी. का ज्ञान है तो वह विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं को इस संबंध में जागरूक कर सकता है तथा इसकी महती आवश्यकता के बारे में अधिक अच्छे ढंग से स्पष्ट कर सकता है।

आरएस-सीआईटी लोगों को महत्वपूर्ण आभासी साक्षरता क्षमताओं से लैस करता है, जिससे वे विभिन्न क्षेत्रों में नौकरी की संभावनाओं की एक विशाल विविधता के लिए अधिक आकर्षक आवेदक बन जाते हैं।

आरएस-सीआईटी से प्राप्त ज्ञान के साथ, लोग कुशलतापूर्वक अह्नलाइन सरकारी पोर्टलों पर नेविगेट कर सकते हैं और विभिन्न सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं, जिसमें फाइलों के लिए आवेदन करना, रिकह्र्ड तक पहुंच और भुगतान करना शामिल है।

आरएस-सीआईटी लोगों को अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के लिए आत्मविश्वास और कौशल प्रदान करके व्यक्तिगत सशक्तिकरण को बढ़ावा देता है।

जो लोग पहले से ही काम पर रखे गए हैं, उनके लिए आरएस-सीआईटी प्रमाणीकरण उनके समकालीन निगम के अंदर कैरियर विकास की संभावनाओं को जन्म दे सकता है या नए पेशे के रास्ते खोल सकता है जिसके लिए डिजिटल साक्षरता क्षमताओं की आवश्यकता होती है।

आरएस–सीआईटी स्नातक डिजिटल विपणन, ई–कह्मर्स, इंटरनेट विकास, आदि जैसे क्षेत्रों में उद्यमशीलता के अवसर तलाश सकते हैं, तथा अपने स्वयं के समूह शुरू करने के लिए अपनी नई डिजिटल क्षमताओं का लाभ उठा सकते हैं।

आरएस–सीआईटी रिकह्र्ड निर्माण के क्षेत्र में निरंतर सीखने और कौशल विकास के लिए आधार तैयार करता है, तथा व्यक्तियों को उन्नत प्रमाणपत्र और प्रकाशन प्राप्त करने के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करता है।

डिजिटल साक्षरता क्षमताओं को प्रस्तुत करके, आरएस–सीआईटी आभासी समावेशन को बढ़ावा देता है, यह सुनिश्चित करता है कि सभी पृष्ठभूमि के लोगों के पास प्रौद्योगिकी का उपयोग करने की समान पहुंच और प्रतिभा हो।

इस प्रकार आर.एस.सी.आई.टी. के द्वारा किसी भी काम को बहुत तेज गति से करना जो और जितना काम बताया जाए वह और उतना ही काम करना, हर काम को पूरी तरह सही करना, अपनी और से कोई भूल या गलती न करना, अपना काम बिना रूके बिना मद्द के करते रहना, आंकड़ो के भण्डार को कम जगह में संग्रह करके रखना, आवश्यकता पड़ने पर सरलता से उपलब्ध करवाना आदि सम्भव है।

अध्ययन का औचित्य :–

अनुसंधानकर्त्री ने वर्तमान में आर.एस.सी.आई.टी. के औचित्य को इस प्रकार स्पष्ट किया है–

1. शिक्षार्थियों के लिये –

अ. शिक्षार्थियों का आर.एस.सी.आई.टी. के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनेगा।

ब. आर.एस.सी.आई.टी. के विभिन्न पहलुओं को सरलता से जान सकेंगे।

ग. शिक्षार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा हो सकेगा।

2. शिक्षकों के लिये –

अ. शिक्षकों में आर.एस.सी.आई.टी. के महत्व से आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

ब. आर.एस.सी.आई.टी. के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनेगा।

स. शिक्षकों में लिंग संबंधी अन्तर को नजरअंदाज करने की भावना का उदय होगा।

द. आर.एस.सी.आई.टी. के प्रति ग्रामीण व शहरी का भेदभाव दूर करने के कारणों की जानकारी होगी।

3. शिक्षा नीति निर्धारकों के लिये –

अ. आर.एस.सी.आई.टी. के प्रसार में सहायता प्राप्त होगी।

ब. प्रसारित किये गये संसाधनों के उपयोग की सुनिश्चितता होगी।

स. विभिन्न प्रकार की योजनाओं में आर.एस.सी.आई.टी. की सहायता ले सकेंगे।

अनुसंधानकर्त्री की नजर में यह कार्य एक नवाचार शैक्षिक लक्ष्य पर विद्यालयोपयोगी, समाजोपयोगी एवं अध्यापकों के लिए फलदायी होगा, जिससे हम राजस्थान स्टेट सर्टिफिकेट ऑफ इन्फोर्मेशन टेक्नोलॉजी (RS-CIT) की विद्यालयों में अनुप्रयोग के प्रति अध्यापकों की अभिमती को जान सकेंगे। किसी भी अध्ययन की सार्थकता उसकी आवश्यकता के स्वरूप एवं उपयोगात्मक पहलुओं पर निर्भर करती है। साथ ही इस संदर्भ में यह देखा जाता है कि अध्ययन समाज को क्या नई दिशा देने वाला है। उपर्युक्त मानक रूपी दृष्टिकोण को मध्यनजर रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन सार्थक एवं औचित्यपूर्ण है।

समस्या कथन :–

''राजस्थान स्टेट सर्टिफिकेट ऑफ इन्फोर्मेशन टेक्नोलॉजी (RS-CIT) की विद्यालयों में अनुप्रयोग के प्रति अध्यापकों की अभिमती का अध्ययन''

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में RS-CIT के अनुप्रयोग के संदर्भ में अध्यापकों के अभिमत का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना :–

1- ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में RS-CIT के अनुप्रयोग के संदर्भ में अध्यापकों के अभिमत में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमन :–

1. शोध में राजस्थान राज्य के उदयपुर जिले को सम्मिलित किया गया है।
2. शोधार्थी द्वारा उदयपुर जिले के 50 सरकारी व 50 निजी कुल 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

शोधविधि :–

प्रस्तुत शोध में उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री द्वारा दत्त संकलन हेतु सर्वेक्षणात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :–

अभिवृत्ति मापनी :–

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्री द्वारा RS-CIT के अनुप्रयोग के संदर्भ में अध्यापकों के अभिमत के मापन के लिए स्वनिर्मित मापनी को आधार माना गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात मान की गणना की गई है।

समंकों का सारणीयन एवं विश्लेषण :–

प्रस्तुत शोधकार्य में अनुसंधानकर्त्री ने संकलित एवं व्यवस्थित आंकड़ों का विश्लेषण जिस प्रकार किया है, उसका परिकल्पनानुसार विवरण निम्न प्रकार है –

Copyright@2024 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

सारणी संख्या – T.IV.1

ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में RS-CIT के अनुप्रयोग के संदर्भ में अध्यापकों के अभिमत के फलांको के सम्बन्ध में मध्यमान अन्तर की सार्थकता

अध्यापक	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रांतिक अनुपात मान (C.R..Value)	सार्थकता स्तर	
					.05	.01
ग्रामीण	50	28.91	7.85	1.30	सार्थक अन्तर नहीं हैं।	
शहरी	50	30.42	6.28			

($df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$)

विश्लेषण :-

उपर्युक्त सारणी में गणना द्वारा प्राप्त मान तालिका मान से कम है। इस आधार पर परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में RS-CIT के अनुप्रयोग के संदर्भ में अध्यापकों के अभिमत में सार्थक अंतर नहीं है।

आरेख संख्या – 1

ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में RS-CIT के अनुप्रयोग के संदर्भ में अध्यापकों के अभिमत के प्राप्तांकों के मध्यमानों का दण्डारेखीय प्रदर्शन

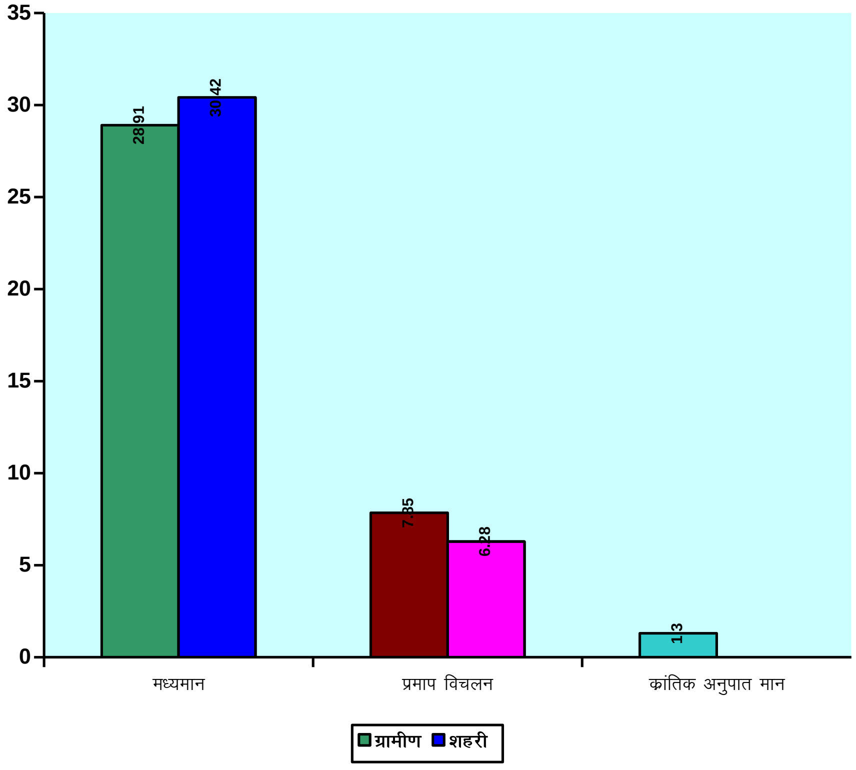

Copyright@2024 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

निष्कर्ष निरूपण –

1. सरकारी एवं निजी अध्यापकों की RSCIT के प्रति अभिवृत्ति में 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई।

हिन्दी संदर्भ साहित्य

1.	*अरोड़ा, श्रीमती रीता (2005)*	:	*"शिक्षण एवं अधिगम के मनो सामाजिक आधार" शिक्षा प्रकाशन जयपुर, पृष्ठ संख्या. 326–327*
2.	*कपिल, एच के. (1979)*	:	*अनुसंधान विधियाँ" द्वितीय संस्करण हरिप्रसाद भार्गव हाऊस आगरा, पृष्ठ संख्या-23*
3.	*कोठारी, सी.आर. (2008)*	:	*"अनुसंधान विधिशास्त्र विधियाँ और तकनीकी" न्यूरोज इन्टरनेशनल लिमिटेड पब्लिकेशन कारपोरेशन, आगरा पृष्ठ संख्या-2*
4.	*जायसवाल, सीताराम (1994)*	:	*'शिक्षा मनोविज्ञान' आर्य बुक डिपो मंदिर करोल बाग नई दिल्ली पेज 221*
5.	*ढोढियाल, एस. पाठक (1990)*	:	*"शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र" राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर पृष्ठ संख्या-51*
6.	*पाठक,पी.डी. (2007)*	:	*"शिक्षा मनोविज्ञान" विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, पृ.सं. 245, 552,450*
7.	*भटनागर, आर.पी.(1973)*	:	*"शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व" द्वितीय संस्करण विनोद पुस्तक मंदिर आगरा पृष्ठ संख्या-107*
8.	*भटनागर, सुरेश, (1996)*	:	*"शैक्षिक प्रबन्ध और शिक्षा की समस्याएं", सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ, पृ. स. 440.*